Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2021, VOL- 9/68

सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

प्रोफे. पी. एस. त्यागी

दयालबाग एजुकेशनल इन्सटीट्यूट, दयालबाग, आगरा

Paper Received On: 21 DEC 2021

Peer Reviewed On: 31 DEC 2021

Published On: 1 JAN 2022

Abstract

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य भावी शिक्षकों में सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति एवं जागरुकता को विकसित करके उनके व्यवहार में इस प्रकार परिवर्तन लाना है जिससे वह राष्ट्रीय शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति में सफल हो सकें। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए गांधी जी ने बुनियादी शिक्षा का प्रत्यय दिया है। इसमें सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का छात्र एवं छात्राओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, और शून्य परिकल्पना की मद्द से प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति पर सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं के पडने वाले प्रभाव को देखा गया है। न्यादर्श के रूप में आगरा जिले के 60 सरकारी एवं 60 गैर- सरकारी (120) प्रशिक्षणार्थियों को चुना गया है। इसके अध्ययन के लिए वर्णात्मक सर्वेक्षण शोध विधि, उपकरण डॉ. एस. पी. अहलूवालिया द्वारा निर्मित शिक्षक अभिवृत्ति मापनी और प्रदत्त विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन, और टी-टैस्ट का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के विश्लेषण के पश्चात यह कहा जा सकता है कि सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति पर संस्थाओं का कोई प्रभाव नहीं पडता है। जबकि प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति लिगं का प्रभाव पडता है फिर चाहे वह सरकारी संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थी हों या गैर-सरकारी संस्थाओं के।

सूचक शब्द (key word)- *प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाएं एवं शिक्षण अभिवृत्ति।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना-

शिक्षक राष्ट्र का निर्माता है। यह कथन पूर्णतया सत्य है। राष्ट्र का विकास अधिकाधिक रूप से शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। वह अपने दिन-प्रतिदिन के कार्यों से छात्रों के जीवन को प्रभावित करते है, प्रत्यक्षतः अपने द्वारा पढाये गये पाठ्यक्रम से तथा अप्रत्यक्षतः अपने व्यवहार, अभिवृत्ति, मूल्य, सम्बन्ध, छात्रों में रूचि के रूप में। इस प्रकार एक शिक्षक अपने कार्य तथा व्यवहार से देश के भावी कर्णधारों का निर्माण करता है। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-53) ने भी कहा है कि अपेक्षित शिक्षा के पुनर्निर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व शिक्षक, उसके व्यक्तिगत गुण, शैक्षिक योग्यताएं, व्यवसायिक प्रशिक्षण एवं उसकी शिक्षण के प्रति अभिवृति है जो वह विद्यालय तथा समाज के जीवन पर उसका प्रभाव निःसन्देह रूप से उन अध्यापकों पर निर्भर करता है जो विद्यालय में कार्यरत होते हैं।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

यह आवश्यक है कि शिक्षक योग्य, कुशल और शिक्षण में रूचि रखने वाला हो तभी वह देश को सही दिशा उन्नति हेतु अग्रसर कर सकता है अतः एक योग्य शिक्षक निर्माण हेतु उसे प्रशिक्षण अथवा शिक्षा देने की आवश्यकता है। अमेरिकी शिक्षाशास्त्री किलपैट्रिक ने कहा है कि शिक्षक-प्रशिक्षण में शारीरिक एवं मानसिक दोनों क्रियाएं सम्मिलत हैं। अतः एक प्रशिक्षित शिक्षक अपने व्यवसाय में अधिक योग्य सिद्ध होता है। इसके विपरीत एक अप्रशिक्षित शिक्षक यह एक जोखिम भरा कार्य है।

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य भावी शिक्षकों में सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति एवं जागरुकता को विकसित करके उनके व्यवहार में इस प्रकार परिवर्तन लाना है जिससे वह राष्टीय शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति में सफल हो सकें। वर्तमान में शिक्षक शिक्षा के गिरते हुए स्तर को उठाने हेतु प्राथमिक शिक्षक-शिक्षा के स्तर में सुधार की आवश्यकता है, तभी उच्च शिक्षा का स्तर सुदृढ होगा। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए गांधी जी ने बुनियादी शिक्षा का प्रत्यय दिया है। गांधी जी ने बुनियादी शिक्षा के प्रत्यय के बाद ही बेसिक प्रशिक्षण कॉलेज अस्तित्व में आए। उत्तर प्रदेश में सर्वप्रथम इलाहबाद में प्राथमिक विद्यालय शिक्षकों हेतु बेसिक प्रशिक्षण कार्य प्रारम्भ किया गया। पूर्व प्रशिक्षण (बी.टी.सी.) द्वारा ही प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में सकारात्मक शिक्षण अभिवृत्ति तथा जागरूकता का विकात करके अध्यापकों को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। मार्च 1976 में एन. सी. टी. ई. ने यू. सी. जी. के साथ मिलकर अध्यापक शिक्षा के विकास सुझाव देने हेतु एक योजना प्रपत्र तैयार किया। इसमें निष्कर्ष निकला कि अध्यापक प्रशिक्षण में गुणवत्ता लाकर ही अध्यापन को सर्वोत्म बनाया जा सकता है। सन् 1986 से पूर्व भारत में प्राथमिक शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु राजकीय तथा वित्तपोषित संस्थाएं ही कार्य कर रही थीं परन्तु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में कहा गया कि वर्तमान परिस्थिति में सरकार नये संसाधनों का भार वाहन करने में असमर्थ थी, अतः विकल्प के रूप में उपाय यह है कि उच्च शिक्षा को स्ववित्तपोषित बनाया जाये। जिससे आने वाली पीढियों को यह नया मार्ग अपनाने में सुविधा रहेगी। परिणाम स्वरूप वर्तमान भारत में शिक्षक-प्रशिक्षण हेतु राजकीय, वित्तपोषित(सरकारी) एवं स्ववित्तपोषित (गैर सरकारी) संस्थाएं कार्य कर रही हैं।

समस्या का प्रादुर्भाव-

शिक्षा एक त्रिआयामी प्रक्रिया है। एसके तीमों आयाम (शिक्षक, छात्र और पाठ्यक्रम) सदैव ही शोध का विषय रहे हैं, परन्तु शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया के अन्य दो आयामों को अत्याधिक प्रभावित करता है। अतः शिक्षक के शिक्षण व्यवहार, कुशलता, प्रभावशीलता, व्यवसायिक दबाव, सामायोजन, अभिवृत्ति, जागरुकता आदि पर शोध किए जाते रहे हैं।

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के शिक्षाक्रम से प्रति शिक्षण अभिवृत्ति सम्बन्धित अध्ययनों में पारा फिलियस 2009, परमार तथा अन्य 2008, पार्वती एस. जी. 2007, पी. शर्मा 2006, रश्मि अग्रवाल एवं निशा सिंह 2003, जी. के. सीमेण्टरी 2000, शोली जोसेफ 2000 ने पाया कि शिक्षण अभिवृत्ति पर लिंग, क्षेत्र और संस्था का कोई प्रभाव नहीं पाया गया है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समस्या कथन- सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण-

सरकारी- सरकारी संस्थाओं से तात्पर्य ऐसे संस्थाओं से है जो राज्य सरकार द्वारा संचालित होते हैं, अथार्त जिनकी प्रशासनिक, वित्तीय एवं संगठनात्मक समस्त व्यवस्था राज्य सरकाराधीन होती है।

गैर सरकारी- गैर सरकारी संस्थाओं से तात्पर्य ऐसे संस्थाओं से है, जिन्हें राज्य सरकार द्वारा किसी भी प्रकार का अनुदान नहीं दिया जाता है। ऐसे संस्थान रजिस्टर्ड सोसायटी अथवा ट्रस्ट बनाकर स्वयं के संसाधन तथा विद्यार्थियों से शुल्क प्राप्त करके संस्था का संचालन करते हैं।

प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण- प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण से अभिप्राय प्राथमिक शिक्षकों को उनके उत्तरदायित्वों को पूरा करने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति और व्यवहार के व्यवस्थित विकास से है, इसमें पूर्व व्यवसायिक शिक्षक प्रशिक्षण सम्मलित है।

प्रशिक्षणार्थी- ऐसे सरकारी एवं गैर सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थी जो बी.टी.सी. पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्राथामिक स्तर के शिक्षक बनने के लिए वांछित शिक्षण कौशलों का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हों।

शिक्षण अभिवृत्ति- शिक्षण अभिवृत्ति से तात्पर्य प्रशिक्षणार्थियों के उस दृष्टिकोण से है, जिसके कारण वे किसी वस्तु, परिस्थिति, व्यक्ति, संस्था अथवा शिक्षण के प्रति विशिष्ट प्रकार का व्यवहार करते हैं।

अधययन के उद्देश्य-

1. सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति अध्ययन करना।
3. सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की प्रति शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की प्रति शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना-

1. सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

3. गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमांकन-

अधययन की प्रकृति एवं समय सीमा को ध्यान में रखते हुए आगरा जिले के अन्तर्गत संचालित सरकारी (डी.आई.ई.टी.) एवं गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं में अधययनरत प्रशिक्षणार्थियों तक सीमित रखा गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त चर-

स्वतन्त्र चर- सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाएँ।

आश्रित चर- प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति।

अध्ययन हेतु न्यादर्श-

अध्ययनार्थ आगरा जिले के सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान डी.आई.टी.ई. तथा गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के महिला पुरूष प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया गया है जिनका विवरण निम्न प्रकार है-

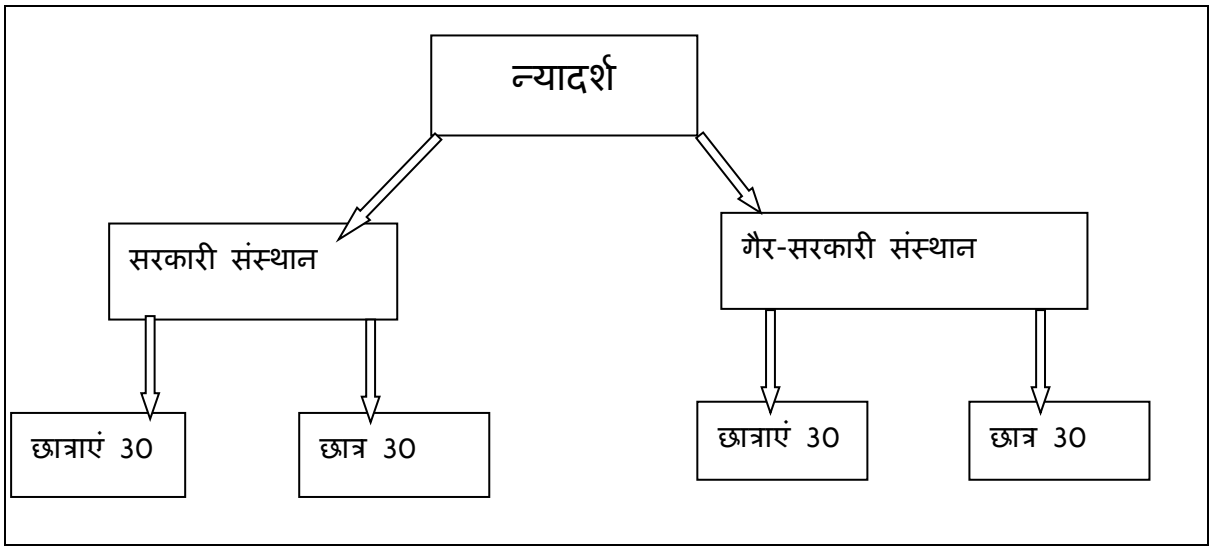

चित्र सं0 1.0 अध्ययन हेतु न्यादर्श

अध्ययन की विधि- अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के उपकरण- अध्ययन हेतु डॉ. एस. पी. अहलूवालिया द्वारा निर्मित शिक्षक अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी- प्रस्तुत शोध में प्रदत्त विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन, और टी-टैस्ट का प्रयोग किया गया है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आंकडों का विश्लेषण एवं व्याख्या-

परिकल्पना संख्या 1- सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु शोधार्थी द्वारा न्यादर्श की शिक्षण अभिवृत्ति के प्राप्तांकों से संस्थाओं के क्रम में मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी अनुपात निकाला गया है जिन्हें सारिणी संख्या 12.1 में दर्शाया गया है।

सारिणी संख्या 12.1 सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति के अन्तर की सार्थकता

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	SED	टी	सार्थकता स्तर
1	सरकारी	60	228.75	36.96	1.13	1.99	0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।
2	गैर-सरकारी	60	226.50	30.42			

सारिणी में प्रदर्शित परिणामों का गहनता से अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सरकारी संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 228.75 है जो कि गैर-सरकारी संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति के मध्यमान 226.75 से अधिक है आथार्त सरकारी संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति गैर- सरकारी संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति से मध्यमान की दृष्टि से उच्च है परन्तु समूहों में विचलनशीलता क्रमशः 36.96 तथा 30.42 है आथार्त सरकारी संस्थाओं में अध्ययनरत प्रशिक्षणार्थियों का समूह गैर- सरकारी की अपेक्षा उत्तम है। प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमानों के सार्थक अन्तर के निरीक्षण के लिए टी की गणना की गई। टी का मान 1.99 ज्ञात किया गया जो कि 0.05 सार्थकता स्तर गर दिये गये टी के मान से कम है अथार्त मध्यमानों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः उद्देश्य के आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। इस लिए कहा जा सकता है कि शिक्षण अभिवृत्ति पर संस्था का कोई विशेष नहीं प्रभाव पडता है।

परिकल्पना संख्या 2- सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु शोधार्थी द्वारा न्यादर्श की शिक्षण अभिवृत्ति के प्राप्तांकों से लिंग के क्रम में मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी अनुपात निकाला गया है जिन्हें सारिणी संख्या 12.2 में दर्शाया गया है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सारिणी संख्या 12.2 सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति के अन्तर की सार्थकता

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	SED	टी	सार्थकता स्तर
1	छात्र	30	224.5	37.59	1.59	5.03	0.01 स्तर पर सार्थक है।
2	छात्राएं	30	232.5	36.02			

सारिणी में प्रदर्शित परिणामों का गहनता से अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि सरकारी संस्थाओं में अध्ययनरत पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 224.5 है तथा प्रमाप विचलन 37.59 है महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 232.5 है तथा प्रमाप विचलन 36.02 है आथार्त महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति पुरूषों से मध्यमान की दृष्टि से उच्च है तथा महिलाओं की विचलनशीलता पुरूषों की विचलनशीलता से कम है। प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमानों के सार्थक अन्तर के निरीक्षण के लिए टी की गणना की गई। टी का मान 5.03 ज्ञात किया गया जो कि 0.01 सार्थकता स्तर गर दिये गये टी के मान सेअधिक है अथार्त मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः उद्देश्य के आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इस लिए कहा जा सकता है कि शिक्षण अभिवृत्ति पर लिंग का प्रभाव पडता है।

परिकल्पना संख्या 3- गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु शोधार्थी द्वारा न्यादर्श की शिक्षण अभिवृत्ति के प्राप्तांकों से लिंग के क्रम में मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी अनुपात निकाला गया है जिन्हें सारिणी संख्या 12.1 में दर्शाया गया है।

सारिणी संख्या 12.3 गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति के अन्तर की सार्थकता

क्र. सं.	समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	SED	टी	सार्थकता स्तर
1	छात्र	30	220	27.38	1.41	5.67	0.01 स्तर पर सार्थक है।
2	छात्राएं	30	234	30.94			

सारिणी में प्रदर्शित परिणामों का गहनता से अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि गैर-सरकारी संस्थाओं में अध्ययनरत पुरूष प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 220 है तथा प्रमाप विचलन 27.38 है महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति का मध्यमान 234 है तथा प्रमाप विचलन 30.94 है आथार्त महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति पुरूषों से मध्यमान की दृष्टि से उच्च है तथा पुरूषों की विचलनशीलता महिलाओं की

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

विचलनशीलता से कम है। प्रशिक्षणार्थियों के मध्यमानों के सार्थक अन्तर के निरीक्षण के लिए टी की गणना की गई। टी का मान 5.67 ज्ञात किया गया जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर दिये गये टी के मान से अधिक है अथार्त मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः उद्देश्य के आधार पर निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इस लिए कहा जा सकता है कि शिक्षण अभिवृत्ति पर लिंग का प्रभाव पडता है।

शोध निष्कर्ष- प्रस्तुत शोध में निर्मित एक शून्य परिकल्पना स्वीकृत हुई है और दो परिकल्पना अस्वीकृत हुई है। प्रथम परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है जिसमें सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। द्वितीय परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है जिसमें सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया। तृतीय परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है जिसमें गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया।

उपर्युक्त परिकल्पनाओं का अध्ययन करने के पश्चात हम यह कह सकते हैं कि सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति पर संस्थाओं का कोई प्रभाव नहीं पडता है। जबकि प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं के पुरूष एवं महिला प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति लिगं का प्रभाव पडता है फिर चाहे वह सरकारी संस्थाओं के प्रशिक्षणार्थी हों या गैर-सरकारी संस्थाओं के।

शैक्षिक निहतार्थ- राष्ट्र का विकास अधिकाधिक रूप से शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। वह अपने दिन-प्रतिदिन के कार्यों से छात्रों के जीवन को प्रभावित करते है। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षक योग्य, कुशल और शिक्षण में रूचि रखने वाला हो तभी वह देश को सही दिशा उन्नति हेतु अग्रसर कर सकता है अतः एक योग्य शिक्षक निर्माण हेतु उसे प्रशिक्षण अथवा शिक्षा देने की आवश्यकता है। नकारात्मक, प्रतिकूलित अभिवृत्ति शिक्षण को कठिन, जटिल एवं अरूचिकर बनाती है। अतः भावी शिक्षकों को तैयार करने वाले शिक्षकों का उत्तरदायित्व है कि वे प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण अभिवृत्ति को जानकर उसे सकारात्मक बनाने का प्रयास करें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

अग्रवाल, रश्मि और सिंह, निशा (2003). शिक्षकों के परिप्रक्ष्य में अभिवृत्यात्मक परिवर्तन. यूनीवर्सिटी न्यूज, पृ. सं. 23-30।
गुप्ता, एस. पी. (2010). उच्चतर शिक्षा मनोविशज्ञान, शारदा पुस्तक भवन इलाहबाद(उ.प्र.)।
कॉल, लोकेश, (2010). मैथडलोजी ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, विकास प्रकाशन नई दिल्ली।
किलपैट्रिक, डब्ल्यू. एच.(1954). शिक्षा में शिक्षक की भूमिका, मैकमिलन एण्ड कम्पनी, न्यूयार्क।
जोसेफ, शोली (2001) कन्नूर विश्वविद्यालय(भारत) में बी.एड. में अध्ययनरत शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण के प्रति रूचि का अध्ययन, एक्सपेरिमेन्टल एजुकेशन, 29, 12।
परमार, एस. और जोशी, वी. (2008). छात्र शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति और शिक्षण कुशलता का अध्ययन,यूनीवर्सिटी न्यूज।
शर्मा, पी. (2006). बी.एड. छात्राध्यापकों की शैक्षिक उपलब्धि, व्यवसायिक शिक्षण और सामान्य शिक्षण कुशलता का शिक्षण अभिवृत्ति के सम्बन्ध में अध्ययन। htt://imi/nic.in/research/ab2006_education_parveensharma,htmA.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies